

## पाठ-7

### कबीर

#### कबीर जीवन परिचय -

कबीर के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत। कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यतः कबीर ग्रन्थावली में संगृहीत हैं, किंतु कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह विजक टी. प्रामाणिक माना जाता है। कुछ रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहन में भी संकलित हैं।

कबीर अत्यंत उदार, निर्भय तथा सद्गृहस्थ संत थे। राम और रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। उन्होंने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा के साथ आत्मबोध और जगतकोय की अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। कबीर की भाषा की सहजता ही उनकी काव्यात्मकता की शक्ति है। जनभाषा के निकट होने के कारण उनकी काव्यभाषा में दर्शनीय चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की ताकत है।

## साखिया

1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

ॐ - कबीर दास जी ने 'मानसरोवर' शब्द को दो अर्थ में प्रयुक्त किया है जिसका सामान्य अर्थ कैलाश पर्वत के समीप सुप्रसिद्ध मानसरोवर झील है जो हंस का प्रिय निवास स्थान है। दूसरा विशेष अर्थ मन रूपी सरोवर है। जिसमें आत्मा रूपी हंस विचरण करते हुए तरह-तरह से अपने कार्यों को कर रही है।

2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

ॐ - कबीर दास जी ने सच्चे प्रेमी की कसौटी बताते हुए कहा है किसी व्यक्ति ईश्वर को भक्ति में लीन होते हुए दूसरे व्यक्ति के हृदय में मलिनता को दूर कर देता है एवं उसे ईश्वर की भक्ति के प्रति प्रेरित कर देता है। वही उसकी सच्ची कसौटी होती है।

3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के तान को महत्व दिया है।

ॐ - जिस मनुष्य को सच्चा ज्ञान होता है। वह सदा सहन रूप परमात्मा के ध्यान में लीन रहता है। संसार के लोग उसके बारे में क्या करेंगे इसकी उसे कोई भी चिंता नहीं रहती है। जैसे लोगो को देखकर बिना मतलब के कुत्ता भौंकने लगता है उसी तरह संसार के लोग भी भगवान के भक्तों के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं फिर भी उनकी भक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

ॐ - कबीर दासजी के अनुसार सच्चा संत कभी भी किसी भी प्रकार के वाद -विवाद में नहीं पड़ता है। वह तो हर प्रकार से अलग रह कर निष्पक्ष भाव से ईश्वर की भक्ति में लीन रहता है वही सच्चा संत कहलाता है।

5. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की सकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

ॐ - कबीर दास जी ने प्रथम दोहे में धार्मिक भेदभाव का व्यवहार करने को सकीर्णता तथा दूसरे दोहे में उच्च कुल में जन्म लेने पर अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की सकीर्णता की ओर संकेत करते हुए। दोनों को मोह त्यागने के लिय कहा है।

6. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से तर्क सहित उत्तर दीजिए।

ॐ - प्रत्येक व्यक्ति की पहचान उसके कुल से ना होकर उसकी कर्मा से होती है। यदि किसी व्यक्ति का जन्म उच्च कुल में हुआ है। यदि उसके कर्म बुरे हैं। तो वह संस्कार में निन्दा का माना जाता है यदी किसी व्यक्ति का जन्म निम्न कुल में हुआ है। यदि उसके कर्म श्रेष्ठ हैं तो वह संसार में सभी से आदर व सम्मान पाता है उसी तरह यदि सोने के कलश में शराब को भर दिया जाता है तो वह श्रेष्ठ नहीं हो जाती है। बल्कि साधु व सज्जन लोग फिर भी उसकी निन्दा ही करते हैं।

## 7. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहन दुलीचा डारि ।

स्वान रूप संसार है, भूकन दे झष मारि।

ॐ - प्रस्तुत साकी (कबीर दास) जो द्वारा रचित है इसमें उन्होंने उपमा एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग किया है। उन्होंने सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग करके अपना मनोभावों को बहुत अच्छी तरह व्यक्त किया है। उन्होंने ज्ञान को समान बताया है। इस तरह उन्होंने काव्य के सभी नियमों का बहुत ही अच्छी तरह पालन किया है।

## सबद

## 8. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?

ॐ - कबीर दास जी के अनुसार मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, कामवा, कैलाश पर्वत तथा विभिन्न प्रकार के कर्मकांडो तथा योग वैराग में ढूँढता फिरता है किन्तु वास्तव में ईश्वर प्रत्येक जीव की साँसों में विद्यमान रहता है।

## 9. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

ॐ - कबीर दास जी ने अनेक प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। उनके अनुसार ईश्वर न तो मंदिरों में न मस्जिदों में, न ही कर्मकांडों में, न ही योग-वैराग में और न ही किसी भी तीर्थ यात्राओं में पाए जाते हैं बल्कि ईश्वर तो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में निवास करते हैं।

## 10. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वासो की स्वाँस में' क्यों कहा है?

ॐ - ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माणकर्ता एवं पालनकर्ता है। सभी जीवधारी उसी की रचना है। वह किसी भी जीव से अलग या विभिन्न नहीं है। इसलिए कबीरदास जी ने ईश्वर को 'सव स्वाँसो की स्वाँस में कहा है।

11. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

ॐ - कबीर दास जी के अनुसार जब ईश्वरीय ज्ञान का आगमन होता है तब उसका प्रभाव बहुत ही चमत्कारी होता है। उस समय सांसारिक बंधन पूरी तरह टूट जाते हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे न होकर पूरे प्रवाह के साथ होता है। जिस तरह आँधी के आने पर सभी चीजे उड़ जाती हैं। इसलिए कबीर दास जी ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से की है।

12. ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

ॐ - ज्ञान की आँधी आने पर भक्त के जीवन में सकारात्मिक परिवर्तन आने लगते हैं वह मोह-माया, अपना पराया एवं सभी तरह की बुरी इच्छाओं से मुक्त हो जाता है। ज्ञान के प्रकाश के उदय होने पर भक्त के मन में अज्ञान का अहंकार पूरी तरह नष्ट हो जाता है और ज्ञान रूपी निर्मित प्रकाश का उदय होने लगता है और भक्त पूरी तरह ईश्वर की भक्ति में प्रदान हो जाता है और उसका जीवन आनंद से भर जाता है।

13. भाव स्पष्ट कीजिए-

1) हिति चित्त की द्वे थूनी गिरांनी, मोह बलिंडा टूटा ।

ॐ - कबीर दासजी ने प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से बताया है कि ज्ञान के उदय होने पर ही भक्त के मन में अपने, पराए का भेद नष्ट हो जाता है वह मोह माया के भावना से पूरी तरह मुक्त हो जाता है और सदा-सदा के लिए ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है।

2) आँधी पीहै जो जल वूठा, प्रेम हरिजन भीना।

ॐ - कबीर दासजी का प्रस्तुत पंक्ति से आशय यह है कि मनुष्य को जब ज्ञान की प्रप्ति होती है तो वह ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है। उसके ऊपर भक्ति के आनंद रूपी जल की वर्षा होने लगती है और उसका हृदय पूरी तरह भगवान भक्ति में लीन हो जाता है अर्थात् फिर उसे किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं रहती है।

14. संकलित साबियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।;

ॐ - कबीर दास जी सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के निर्गुण, निराकारी संत निगुण, हैं। वह हिन्दू और मुस्लिमान दोनों के आडम्बरो का विरोध करते थे। कांवा और काशी को एक ही मानते थे। उनके अनुसार ईश्वर कण-कण में समाया हुआ है। उन्होंने बताया था कि ईश्वर को कहीं भी खोजने की आवश्यकता नहीं है वे तो प्रत्येक जीव के हृदय में हर तरह से समाज में सांप्रदायिक सद्भाव स्थापित करने का प्रयास किया था जो वर्तमान में काफी हद तक दिखाई देता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. कबीर दास जी के गुरु कौन थे?

ॐ - कबीर दास जी के गुरु रामानंदर थे।

2. कबीर दास जी कौनसी संत परंपरा के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं।

ॐ - 'निर्गुण संत परम्परा' के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं।

3. कबीर दास जी की प्रामाणिक रचना कौन सी मानी गई है?

ॐ - 'बीजक' कबीर दास जी की प्रामाणिक रचना मानी गई है।

4. कबीर दास जी की भाषा को किस नाम से जाना जाता है।

ॐ - 'सघुक्कड़ी' भाषा के नाम से जाना जाता है।

**FINISH**